2 मार्च 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आत्मानुभूति प्राप्त करने की प्रक्रिया सद्भावात्मक है, अभावात्मक नहीं।

- मैं कौन हूँ ?, पृष्ठ-14

वर्ष : 32, अंक : 23 | सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मार्च (प्रथम), 2010 | प्रबन्ध सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

भोपाल में डॉ. भारिल्ल का सम्मान

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 11 से 14 फरवरी तक अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह भव्यतापूर्वक आयोजित किया गया।

इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता श्री बाबूलालजी गौर (पूर्व मुख्यमंत्री एवं मंत्री म.प्र. शासन) ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री सुनीलजी सूद (पूर्व महापौर) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुभाषजी जैन (आई.ए.एस.), श्रीमती विमला जैन (जिला जज), श्रीमती मोनिका जैन (पार्षद) एवं श्री मुकेशजी जैन (ढाई द्वीप जिनायतन) इंदौर मंचासीन थे।

विशिष्ट विद्वानों के रूप में सम्मानमूर्ति डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के अतिरिक्त कविवर राजमलजी पवैया भोपाल, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर, डॉ. कपूरचंदजी कौशल भोपाल, ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा मंचासीन थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मंगलाचरण कीर्ति चौधरी ने किया। दीपप्रज्वलन के पश्चात् आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री एम.के.चौधरी ने समागत अतिथियों का वचन पुष्पों से स्वागत किया।

इस अवसर पर समग्र जैन समाज द्वारा शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति प्रदानकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। खण्डेलवाल समाज भोपाल संभाग की ओर से श्री सुभाषजी काला ने, तदुपरान्त आयोजन समिति के 63 लोगों ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। सम्मान के पूर्व पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने डॉ. भारिल्ल का परिचय दिया।

पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान मंत्री म.प्र. शासन श्री बाबूलालजी गौर ने अपने भाषण में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को ज्ञान का राजदूत बताते हुये कहा कि जिसप्रकार एक देश की राजनैतिक सूचनाओं/खबरों/संदेशों को दूसरे देश में पहुँचाने वाले को राजदूत कहते हैं, जो कि उस देश की नीतियों को विश्व में फैलाते हैं; उसीप्रकार डॉ. भारिल्ल विगत 29 वर्षों से अपने देश की संस्कृति एवं ज्ञान को देश-देशान्तर में पहुँचाने का विशिष्ट कार्य अनवरतरूप से कर रहे हैं; इसलिये मैं इन्हें **ज्ञान के राजदूत** की दृष्टि से देखता हूँ।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि यह सम्मान मेरा नहीं; अपितु भगवान महावीरस्वामी की वाणी का, जिनवाणी का, गुरुदेवश्री का सम्मान है, जिनके द्वारा मुझे यह तत्त्वज्ञान मिला है। **(शेष पृष्ठ 2 पर ...)**

वेदी प्रतिष्ठा एवं शिलान्यास संपन्न

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 15 से 17 फरवरी तक तीर्थङ्कर ऋषभदेव सर्वोदय फाउंडेशन न्यास द्वारा वेदी प्रतिष्ठा एवं शिलान्यास सानंद संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अत्यंत सरल भाषा में आत्मा की खोज, आत्मा-परमात्मा, णमोकार महामंत्र आदि विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुए। साथ ही पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन टीकमगढ व पण्डित सतीशचंदजी जैन पिपरई के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

दिनाँक 14 फरवरी को हिरावल के जैन परिवारों द्वारा हिरावल ग्राम के जिनमंदिर में शांति विधान का आयोजन किया गया। 15 फरवरी को प्रात: हिरावल के जिनमंदिर से निष्ठापन विधिपूर्वक भगवान पार्श्वनाथ आदि तीर्थङ्करों के 7 जिनबिम्ब शोभायात्रा के साथ चौबीसी जैन मंदिर धर्मशाला के प्रांगण में विराजमान किये गये। 15 से 17 फरवरी तक याग मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधान के मुख्य आयोजनकर्त्ता श्री महेन्द्रकुमार, अखिल, अनिल, अजित, अरुण, अतुल बंसल थे। ध्वजारोहण श्री कपूरचंद जिनेन्द्रकुमार जैन परिवार ने किया तथा मंगल कलश स्थापनकर्त्ता श्री प्रसन्नकुमार पदमकुमार हाटकापुरा, श्री सुरेशचंद राजीवकुमार सिंघाड़ेवाले, श्री रमेशचंद नीकेशकुमार गोयल तथा श्री बाबूलाल सुरेशचंद पिपरई थे।

17 फरवरी को शोभायात्रा के माध्यम से हिरावल ग्राम के समवशरण को तीर्थधाम आदीश्वरम् परिसर में लाकर विधिवत् अभिषेक एवं वेदी प्रतिष्ठापूर्वक नवनिर्मित वेदी में श्रीजी विराजमान किये गये।

भगवान ऋषभदेव समवशरण जिन मंदिर की शिलान्यास विधि श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट इंदौर के ट्रस्टी श्री मुकेशजी जैन, श्री आनंदकुमारजी पाटनी एवं श्री चांदमलजी संघवी इंदौर के करकमलों से सम्पन्न हुई। स्वाध्याय भवन का शिलान्यास दातार के अनुरोध पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल परिवार द्वारा किया गया।

कार्यक्रम सफल बनाने में चौबीसी जैन मंदिर प्रबंध समिति एवं खन्दार सेवा दल का सहयोग सराहनीय रहा। स्मरण रहे कि मंदिर निर्माण हेतु श्री महेन्द्रकुमार अजितकुमार बंसल ने भूमि प्रदान की है तथा अखिल बंसल सभी के सहयोग से निर्माण कार्य हेतु कृत संकल्पित हैं।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित राजेन्द्रजी टीकमगढ, पण्डित सतीशचंदजी जैन पिपरई, पण्डित सचिनजी मोदी, पण्डित एकत्वजी शास्त्री एवं पण्डित समकितजी शास्त्री ने संपन्न कराये।

सम्पादकीय – 30

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

(गतांक से आगे...) – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा-४५

विगत गाथा ४४ में कहा गया है कि – यदि द्रव्य गुणों से अन्य (भिन्न) हो और गुण द्रव्य से अन्य (भिन्न) हों तो या तो द्रव्य की अनन्तता का प्रसंग प्राप्त होगा या फिर द्रव्य के अभाव का प्रसंग प्राप्त होगा, जो संभव नहीं है।

अब इस गाथा में यह कहते हैं कि द्रव्य और गुणों के कैसा अनन्यपना घटित होता है? मूलगाथा इस प्रकार है –

अविभत्त मणण्णत्तं दव्व गुणाणं विभत्तमणण्णत्तं।
णेच्छंति णिच्छयण्हू तव्विवरीदं हि वा तेसिं ।।४५।।

(हरिगीत)

द्रव्य अर गुण वस्तुतः अविभक्तपने अनन्य हैं।
विभक्तपन से अन्यता या अनन्यता नहिं मान्य है ।।45।।

इस गाथा में आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि – द्रव्य और गुणों के अविभक्त रूप अनन्यपना है। निश्चयनय से न तो विभक्तरूप से अन्यपना है और न विभक्तरूप अनन्यता ही है।

इसी बात को स्पष्ट करते हुए आचार्य अमृतचन्द अपनी समय व्याख्या टीका में कहते हैं कि – द्रव्य और गुणों के स्वोचित् अविभक्त प्रदेशत्व स्वरूप अनन्यपना घटित होता है। विभक्त प्रदेशत्व स्वरूप अन्यपना एवं अनन्यपना नहीं है।

जिसप्रकार एक परमाणु एवं उनके साथ उसमें रहने वाले स्पर्श, रस, गंध, वर्ण आदि गुणों के समान अनन्यता है, उसीप्रकार आत्मा का ज्ञान दर्शन आदि से अविभक्तपना है तथा जिसप्रकार अत्यन्त/दूरवर्ती सह्य एवं विंध्यपर्वत के साथ विभक्त प्रदेशत्व के कारण अन्यपना है, वैसा अन्यपना द्रव्य गुण के साथ नहीं है।

कविवर हीरानन्दजी काव्य के द्वारा यही कहते हैं –

(दोहा)

अविभक्त अनन्यता, दरव-गुननि मैं होइ।
विभक्त्व अन्यत्व फुनि निहचैरूप न कोई।।२३०।।

अर्थात् अविभक्त और अनन्यता द्रव्य और गुणों में होती है तथा द्रव्य एवं उसी द्रव्य के गुणों में निश्चय से परस्पर विभक्त्व एवं अन्यत्व नहीं होता।

(सवैया इकतीसा)

जैसे एक परमानू अपने परदेससौं,
अविभागी सदा काल सो अनन्य बाचै है।
रूप-रस-गंध-फास अविभक्त गुण सदा,
आनता न परदेस तैसैं एक बाचै हैं।।
जैसे दूर सह्य-विंद्य एक-मेक दूध-तोय,
अविभक्त देसनि सौं अनन्यता जाँचै है।
तैसैं द्रव्य-गुण जुदै देस सौ अन्य नाहिं,
तातैं अविभक्त देससौ अनन्य साँचै हैं।।२३१।।

(सोरठा इकतीसा)

देस भेद तहि नाहिं, तादातम सम्बन्ध जहि।
जुदै नाम दिखराहिं, वस्तु एक दुय भेद हैं।।

उक्त सवैया एवं सोरठा में कहा है कि – जैसे एक परमाणु अपने प्रदेश से सदैव अविभागी होने से अनन्य है। उसके रूप, रस, गंध, वर्ण सदैव अभिन्नपने रहते हैं। दूसरा उदाहरण सह्य और विंध्यपर्वत का दिया है, फिर दूध और पानी का उदाहरण देकर प्रदेशों से अन्यत्व व अनेकत्व होकर भी स्वरूप से एक नहीं है।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि – द्रव्य व गुण का भाव एक है। यद्यपि द्रव्य व गुण के नाम भिन्न हैं; पर भाव एक है-जैसे दूध व उसकी सफेदी में नाम भेद हैं; पर भावभेद नहीं है, उसी तरह आत्मा व ज्ञान, दर्शन, वीर्य आदि गुणों के नामभेद से भेद है; पर उसके प्रदेश भिन्न नहीं हैं। आत्मा और उसके ज्ञान-दर्शन में लक्षण, संख्या, संज्ञा आदि से भेद होने पर भी उनमें प्रदेश भेद नहीं है। इसप्रकार गुण-गुणी अभेद हैं, ऐसी अन्तर्दृष्टि से धर्म होता है।

यद्यपि शरीर व कर्मों का आत्मा से दूध-पानी की भाँति एक क्षेत्रावगाह संबंध दिखाई देता है; परन्तु वे एक नहीं है। इसके विपरीत आत्मा और ज्ञान, दर्शन आदि में लक्षण, संज्ञा, संख्या से भेद दिखाई देता है; परन्तु उनमें प्रदेश भेद नहीं है, वे एक हैं, अभिन्न है। उनका द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव एक है।

इसप्रकार उक्त गाथा, टीका और हिन्दी पद्य में दूर के लिए सह्य एवं विंध्यपर्वत द्वारा एवं एकपने के लिए दूध-पानी आदि अनेक उदाहरणों द्वारा यही कहा है कि द्रव्य व गुणों में अविभक्त रूप अनन्यपना अन्यता है तथा विभक्तपने अन्यता व अनन्यता नहीं है। ●

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

डॉ. भारिल्ल के अभिनंदन के अतिरिक्त कविवर **पण्डित राजमलजी पवैया भोपाल,** श्रीमती बदामीबाई 501 व श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का भी सम्मान किया गया।

इस अवसर पर श्री मुकेशजी जैन ढाई द्वीप जिनायतन इन्दौर की ओर से **णमोकार महामंत्र** पुस्तक एवं **आत्मा की खोज** (डॉ. भारिल्ल के 215 घण्टे के प्रवचन) डी.वी.डी के अतिरिक्त 15000/-रुपये का साहित्य नि:शुल्क वितरित किया गया। कार्यक्रम के पूर्व खचाखच भरे हॉल में डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर मार्मिक प्रवचन हुआ।

सभी कार्यक्रम श्री महेन्द्रजी चौधरी, श्री अशोकजी जैन (सुभाष ट्रांसपोर्ट), श्री सुनीलजी जैन 501, श्री प्रभातजी बज, श्री अरुणजी वर्धमान एवं श्री जितेन्द्रजी सोगानी के निर्देशन में सम्पन्न हुये। कार्यक्रम का संचालन श्री नितिन नांदगांवकर ने किया।

ललितपुर व देवगढ में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती

ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ दिनाँक 19 से 21 फरवरी तक श्री दि. जैन स्वाध्याय मण्डल के तत्त्वावधान में **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर श्री 1008 दि. जैन नया मंदिर में प्रात: एवं रात्रि को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में पण्डित रमेशचंदजी मंगल सोनगढ के विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये।

दिनांक 20 फरवरी को सायं कटरा बाजार में बने विशाल पंडाल में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन के पश्चात् डॉ. भारिल्ल हीरक जयन्ती सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर भारिल्ल द्वय एवं उनकी श्रीमती के अतिरिक्त पण्डित भानुकुमारजी जैन, पण्डित रमेशजी मंगल, पण्डित ऋषभजी जैन, पण्डित गोकुलचंदजी सरोज, श्री दि.जैन पंचायत के अध्यक्ष श्री अजितकुमारजी खजुरिया, उपाध्यक्ष श्री जिनेन्द्र कामरेड, कोषाध्यक्ष श्री सुनीलजी कौशल, वरिष्ठ पत्रकार श्री ज्ञानचंदजी अलया, तारण समाज के अध्यक्ष श्री शीलचंदजी समैया, सेरोनजी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री हीरालालजी खजुरिया, संरक्षक श्री गुलाबचंदजी लागौन आदि महानुभाव मंचासीन थे।

स्वागत गीत कु. श्रद्धा नायक एवं शुचि नायक ने प्रस्तुत किया। स्वागत गीत के उपरांत मंचासीन एवं सभा में उपस्थित अनेक संस्थाओं के पदाधिकारियों, प्रतिनिधियों, सदस्यों तथा शताधिक गणमान्य व्यक्तियों ने डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का माला पहिनाकर, तिलक लगाकर, शॉल ओढाकर तथा श्रीफल भेंटकर सम्मान किया।

सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों ने मिलकर अभिनंदन-पत्र एवं प्रतीक चिह्न भेंट किये। अभिनंदन-पत्र का वांचन जैन पंचायत के अध्यक्ष श्री अजितजी खजुरिया ने किया।

स्वागत/सम्मान के पूर्व डॉ. कमलश्री नायक ने डॉ. भारिल्ल का जीवन परिचय देते हुये उनकी प्रारंभ से लेकर डी. लिट् की उपाधि तक की जानकारी दी तथा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के संपर्क में आने के बाद से उनके जीवन परिवर्तन का इतिहास बताया।

डॉ. भारिल्ल का सम्मान करनेवालों में मुख्यरूप से आई. एम. ए. अध्यक्ष डॉ. निर्मलचंद्रजी जैन, नीमा अध्यक्ष डॉ. अमरचंदजी जैन, आचार्य विद्यासागर साधर्मी विकास न्यास अध्यक्ष डॉ. महेन्द्रकुमारजी जैन, बाबू जीवनलालजी जैन एड., बाबू जयकुमारजी चौधरी एड., बाबू शादीलालजी जैन एड., चांदपुर जहाजपुर क्षेत्र के अध्यक्ष श्री सुमतजी सर्राफ, जैन मिलन अध्यक्ष डॉ. अक्षयजी टडैया, व्यापार मंडल प्रदेश मंत्री श्री महेन्द्रजी जैन, मयूर दयोदय गौशाला ललितपुर अध्यक्ष श्री सतीशजी नजा, देवगढ क्षेत्र कमेटी अध्यक्ष श्री चम्पालालजी नोर, विश्व हिन्दू परिषद के श्री रामगोपालजी नामदेव, श्री स्वाध्याय मंडल अध्यक्ष श्री मुन्नालालजी सैदपुर, कोषाध्यक्ष श्री हुकमचंदजी कौशल, उपमंत्री श्री पवनजी पारौल, ऑडीटर श्री शिखरजी अनौरा, संरक्षक श्री कोमलचंदजी बानोनी, प्रतिनिधि संतोषजी जैन, कंची मोदी, श्री कैलाशजी सतभैया, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के अध्यक्ष श्री राकेशजी अनौरा, मंत्री श्री सुशांतजी जैन, कोषाध्यक्ष श्री अनुरागजी बनौनी, वीतराग-विज्ञान पाठशाला अध्यक्ष श्री प्रकाशजी जैन रडिया, मंत्री श्री बाहुबलीजी खजुरिया आदि की उपस्थिति रही।

इनके अतिरिक्त जैन समाज के अन्य गणमान्य श्री चन्द्रकुमारजी गुडा, श्री महेन्द्र सुनीता, श्री महेन्द्रजी चौधरी, श्री सुमेरजी चौधरी, श्री चम्पालाल कमलेशकुमारजी लागौनवाले, श्री अनिलजी जैन विदिशा, श्री बाबूलालजी दिवाकर, श्री करतारचंदजी, श्री सतीशचंदजी, श्री पवनकुमारजी सैदपुरवाले, श्री प्रेमचंदजी नायक, श्री संजीवजी नायक, श्री कैलाशचंदजी बानपुर, जैन समाज व अन्य समाज की अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधि आदि ने भी उपस्थित होकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने मांगलिक उद्बोधन में कहा कि ये सम्मान मेरा सम्मान नहीं; अपितु जिनवाणी माता का सम्मान है।

इसी प्रसंग पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं उनके लघु भ्राता डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल का भी अनेक लोगों ने माला, तिलक, नारियल एवं शॉल द्वारा सम्मान किया। श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल का स्वागत डॉ. कमलश्री नायक, श्रीमती सुनीता पारोल रत्नप्रभा एड., श्रीमती सरला सैदपुर, श्रीमती हेम चौधरी, श्रीमती चंदा टडैया, श्रीमती सुधा जैन, श्रीमती सोनम जैन, श्रीमती सरला गुढा, श्रीमती मीना इमलया आदि अनेक महिलाओं ने किया।

संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन स्वाध्याय मण्डल के विशिष्ट प्रतिनिधि एवं भूतपूर्व महामंत्री बाबू सुरेशकुमारजी एड. ने किया।

2. देवगढ (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 21 फरवरी को **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

इस अवसर पर देवगढ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सेठ चम्पालालजी जैन (नोहरकलां), उपाध्यक्ष श्री गोकुलचंदजी 'सरोज', महामंत्री बाबू मुरारीलालजी एडवोकेट, मंत्री श्री महेन्द्रजी 'सुनीता', वयोवृद्ध पण्डित मुन्नालालजी एवं पण्डित उत्तमचंदजी 'राकेश' द्वारा तिलक, माल्यार्पण, श्रीफल एवं शॉल द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। प्रतीक के रूप में देवगढ की विश्वप्रसिद्ध उपाध्याय परमेष्ठी प्रतिमा की फोटो एवं अभिनंदन-पत्र भेंट किये गये।

इस प्रसंग पर पण्डित मुन्नालालजी एवं पण्डित उत्तमचंदजी ने डॉ. भारिल्ल की विलक्षण तार्किक बुद्धि एवं निर्भीकता की प्रशंसा करते हुये कहा कि हम बचपन में ही समझ गये थे कि डॉ. भारिल्ल बहुत बड़े विद्वान बनेंगे। इसके पश्चात् पण्डित मुन्नालालजी एवं पण्डित गोकुलचंदजी ने डॉ. भारिल्ल पर स्वरचित कविता का पाठ किया, जिसमें उनकी शीघ्र ही निर्ग्रन्थ अवस्था प्राप्ति की भावना भायी।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि बुन्देलखण्ड की यह धरा अत्यंत पवित्र है। यहाँ मुनिराजों की साधना निर्विघ्नरूप से पलती है। यहाँ देवगढ में भारत के अन्य तीर्थों की अपेक्षा सर्वाधिक प्रतिमाएँ हैं; अत: यह क्षेत्र और भी अधिक पवित्र है। अन्त में सभी का आभार व्यक्त करते हुये सबके वात्सल्य की प्रशंसा की।

कार्यक्रम का संचालन श्री सतीशजी नजा (अध्यक्ष-दयोदय गौशाला) ने किया।

टीकमगढ में डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

टीकमगढ (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 18 फरवरी को **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. एन.एस.गजभिये (कुलपति-डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय विधायक श्री यादवेन्द्र सिंह बुन्देला तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जे.के. जैन (अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता-वाणिज्य एवं प्रबंध अध्ययन संकाय सागर विश्वविद्यालय) एवं श्री राकेशजी गिरी (अध्यक्ष-नगरपालिका टीकमगढ) मंचासीन थे।

इस अवसर पर मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट टीकमगढ, महरौनी एवं बानपुर के पदाधिकारियों द्वारा तिलक, माल्यार्पण, शॉल, श्रीफल आदि से सम्मान के पश्चात् भारतीय किसान कांग्रेस के नेता श्री देवेन्द्रजी पोद्दार, जैन शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री सुनीलजी घुवारा, महावीर बाल संस्कार के अध्यक्ष श्री बालचंद्रजी मोदी, श्री अशोकजी जैन मास्टर, श्री आलोकजी वैद्य, डॉ. अशोकजी जैन, प्रतिष्ठाचार्य पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, बानपुर के ग्राम प्रधान श्री अखिलेशजी चौधरी, केशवगढ सरपंच प्रतिनिधि श्री पुष्पेन्द्रजी जैन आदि ने डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का आत्मीय अभिनंदन किया।

स्वागत भाषण के दौरान **प्रतिष्ठाचार्य श्री राजेन्द्रजी जैन** ने डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। **डॉ. योगेशजी योगेन्द्र अलीगंज** ने डॉ. भारिल्ल को महान शिक्षाविद् बताया। **महरोनी के चौधरी कैलाशचंद्रजी जैन** ने डॉ. भारिल्ल के आदर्श और मर्यादित जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। समारोह के विशिष्ट अतिथि **डॉ. जे. के. जैन** ने डॉ. भारिल्ल के सुकृत्यों से जन-जन को मोक्षमार्ग पर प्रशस्त होने की बात कहते हुये कहा कि व्यक्ति का नहीं; व्यक्तित्व का सम्मान महत्वपूर्ण है। मुख्य अतिथि **क्षेत्रीय विधायक श्री बुन्देला** ने डॉ. भारिल्ल को समूचे बुन्देलखण्ड की शान बताया। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में **प्रो. एन.एस. गजभिये (कुलपति)** ने जैनदर्शन एवं इसके सिद्धांतों को मानव जीवन के लिये कल्याणकारी बताते हुये डॉ. भारिल्ल की तात्त्विक शैली की प्रशंसा की तथा जैनदर्शन में उनके अमिट साहित्यिक योगदान को ऐतिहासिक उदाहरण बताया।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्‌बोधन में जैन सिद्धांतों को घर-घर पहुंचाने का संकल्प दोहराया एवं स्वाध्याय पर विशेष व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सुश्री प्रियंका जैन ने, संचालन एम. डी. जैन कॉलेज आगरा के प्रवक्ता श्री आलोकजी जैन ने तथा आभार प्रदर्शन श्री सुरेशचंद्रजी पिपरा ने किया।

हार्दिक बधाई !

1. तिलकनगर-जयपुर निवासी श्रीमती मृदुला जैन ध.प. डॉ. रवि जैन के सुपुत्र श्री प्रतीक जैन का विवाह दिनाँक 12 दिसम्बर को **स्वाति जैन** के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में श्रीमती चन्द्राजी जैन द्वारा 251/- ज्ञानदान स्वरूप प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

2. श्री जगनमलजी सेठी के सुपौत्र एवं श्री अजीतकुमारजी सेठी के सुपुत्र **चि. अनंत** का विवाह दिनांक 20 जनवरी को डॉ. शिवकुमारजी जैन की सुपौत्री एवं श्री अजयकुमारजी जैन की सुपुत्री **सौ. निधि** के साथ सम्पन्न हुआ। विवाहोपलक्ष्य में 500/- जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुए।

उक्त सभी को जैन पथ प्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

1. कुंथलगिरि (महा.) : यहाँ दिनाँक 13 से 15 फरवरी तक तीन समय 2-2 घंटे **मोक्षमार्गप्रकाशक** के आधार से तत्त्वचर्चा हुई। इस कार्यक्रम में एम. जी. विद्यामंदिर बाहुबली से 1958 में मैट्रिक पास करने वाले ब्र. यशपालजी के बैच के सभी विद्यार्थी उपस्थित थे। इस अवसर पर पण्डित रामकुमारजी आनंद सोलापुर के प्रवचन का भी लाभ मिला।

2. छिंदवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 20 जनवरी से 7 फरवरी तक **भावदीपिका की चूलिका अधिकार** पर मार्मिक प्रवचन हुये।

3. नागपुर (महा.) : यहाँ दो दिन महावीर विद्या निकेतन के छात्रों को मार्गदर्शन दिया।

4. औरंगाबाद (महा.) : यहाँ दो दिन तक **मोक्षमार्ग की पूर्णता** पर प्रवचन हुये।

सभी स्थानों पर तत्त्वप्रचार द्वारा महती धर्म प्रभावना हुई।

शोक समाचार

1. गजपंथा-नासिक (महा.) निवासी श्री अमरचंदजी बेलोकर का दिनांक 17 फरवरी को अत्यंत शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप स्वाध्यायी एवं सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। हाल ही में हुये गजपंथा पंचकल्याणक के सफल आयोजन में आपका महत्वपूर्ण योगदान था। ज्ञातव्य है कि आप ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर के भतीजे थे।

2. देवरी-बारां (राज.) निवासी श्रीमती देवकी जैन धर्मपत्नी श्री ख्यालीचंदजी जैन का दिनाँक 18 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप नियमित स्वाध्याय करती थीं। आपके पुत्र एवं पुत्रवधु श्री ओमप्रकाशजी जैन एवं श्रीमती वर्षा जैन की ओर से आपकी स्मृति में 500/- जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुए।

3. सागर (म.प्र.) निवासी श्रीमती उर्मिला जैन का दिनाँक 12 नवम्बर को 55 वर्ष की आयु में शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत अध्यात्मप्रेमी स्वाध्यायी महिला थीं।

4.खड़ैरी-दमोह (म.प्र) निवासी श्रीमती श्यामाबाई (सरस्वती) का दिनाँक 22 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय में द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत छात्र सौरभ खड़ैरी की दादीजी थीं।

5. उदयपुर (राज.) निवासी श्रीमती सुशीलादेवी जैन धर्मपत्नी श्री शांतिलालजी जैन (सोनी) का दिनाँक 1 दिसम्बर को 68 वर्ष की आयु में शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप धर्मपरायण, कर्त्तव्यशील, विदुषी महिला थीं। आपके निधन से समस्त जैन महिला समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 251/-प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें ह इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 543 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 59 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को योग्यतानुसार दो वर्ष का राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) का प्राक्शास्त्री परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी है, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

आगामी सत्र 20 जून 2010 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है, अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **देवलाली (महा.) में 16 मई से 3 जून, 2010 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

– देवलाली का पता –
श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट,
बेलतगांव रास्ता, लाम रोड़,
देवलाली, जिला-नासिक (महा.)
फोन : (0253) 2491044

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्राचार्य
श्री टोडरमल दि.जैन सि.महाविद्यालय,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
फोन : 0141-2705581, 2707458

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 33 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।
5. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।
11. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ ... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 16 मई से 3 जून 2010 तक देवलाली (महा.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

ह पीयूष शास्त्री एवं धर्मेन्द्र शास्त्री

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन-0141-2705581, 2707458

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

47 ग्यारहवाँ प्रवचन - डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जिसप्रकार खेत में अनाज पैदा करने के लिए जमीन को तैयार करना होता है, उसे सींचना पड़ता है; पर उसमें घास-फूस बिना बोये ही उग आता है और सारी खुराक खुद खा जाता है, अनाज को पनपने ही नहीं देता, उसीप्रकार यह क्रियाकाण्ड नाच-गाना तत्त्वज्ञान के अनाज को पनपने ही नहीं देता है; उसकी सारी खुराक यह खा जाता है।

आत्मार्थियों का धनबल, जनबल और बुद्धिबल भी इसी में लग जाता है। अच्छे भले विद्वान गवैया-नचैया बनकर रह जाते हैं। पुण्य में धर्म नहीं है - यह प्रतिपादन करनेवाले गुरु के शिष्य पुण्य के गीत गाने लगते हैं, पुण्य कमाने की प्रेरणायें देने लगते हैं, तो ऐसा लगता है कि पानी में आग लग गई है।

क्या यह आत्मार्थी समाज का छोटा नुकसान है ?

जिसप्रकार किसान अनाज की सुरक्षा के लिए खेत में से घास-फूस को उखाड़ देता है, तभी अनाज पनपता है; उसीप्रकार यदि तत्त्वज्ञान के बीज को उगाना है तो इन पद्धतियों को उखाड़ फेंकना बहुत जरूरी है।

यदि पूरी तरह से उखाड़ना संभव न हो तो उसे सीमा में रखना तो अत्यन्त आवश्यक है ही। यदि हमने इस दिशा में कुछ नहीं किया तो न तो तत्त्वज्ञान बचेगा और न पण्डित टोडरमलजी और पूज्य गुरुदेवश्री; क्योंकि वे अपने तत्त्वज्ञान से ही जाने-पहिचाने जाते हैं।

पण्डित टोडरमलजी तो साफ-साफ लिख रहे हैं कि जहाँ हिंसादि पाप उत्पन्न हों व विषय-कषायों में वृद्धि हो, वहाँ धर्म माने सो कुधर्म है।

जब हम नाचते हैं तो क्या ईर्यासमिति पूर्वक नाचते हैं? आपके नाचने से कितने जीवों का घात होता है - सोचा है आपने कभी ?

हम सौधर्म इन्द्र का बहाना लेते हैं; पर भाई साहब सौधर्म इन्द्र के नृत्य में एक भी जीव का घात नहीं होता; क्योंकि उनका शरीर वैक्रियिक होता है; पर हम सब औदारिक शरीरवाले हैं; इसलिए हमारी शारीरिक उछलकूद से तो अनन्त जीवों का घात होता है।

अरे भाई ! लोगों का नाच-गाना देखकर, सुनकर भी लोग आँख-कान के विषयों का ही पोषण करते हैं। यदि कोई व्यक्ति ढंग से नहीं नाच पाता हो या गानेवाले का गला अच्छा न हो, तो फिर देखिये लोगों की प्रतिक्रिया। उक्त प्रतिक्रिया से हम समझ सकते हैं कि वे चक्षु और कर्ण इन्द्रियों के विषयों का आनन्द ले रहे थे या आत्मा का; उनकी वह प्रसन्नता, उनका वह आनन्दित होना विषयानन्द है या आत्मानन्द ?

ये कुछ ऐसी बातें हैं, जो गंभीरता से विचार करने योग्य हैं।

इस पर कुछ लोग कहते हैं कि हम तो यह सब धर्मप्रभावना के लिए करते हैं। ऐसे लोगों से हम यह कहना चाहते हैं कि असली धर्मप्रभावना तो वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में है, जिनेन्द्र भगवान की वाणी को, जिनवाणी को, जैनशास्त्रों को घर-घर पहुँचाने से होती है, नाचने-गाने से नहीं। नाचने-गाने से तत्त्वप्रभावना होती नहीं है, अपितु बाधित होती है; क्योंकि लोगों ने जिनधर्म की प्रभावना के लिए अर्थात् तत्त्वज्ञान को घर-घर तक पहुँचाने की भावना से इतना बड़ा महोत्सव किया, हजारों लोगों को इकट्ठा किया, करोड़ों रुपये खर्च किये; फिर भी जिनवाणी तो घर-घर पहुँची नहीं, भगवान की दिव्यध्वनि का सार तो समझाया नहीं जा सका और सभी का संपूर्ण समय इन अनाड़ियों के नाच-गाने देखने-सुनने में चला गया, बारात में शामिल होने में या बारात का स्वागत करने में चला गया।

बारातें तो हम रोजाना देखते हैं, उनमें जाते भी खूब हैं और नाच-गाने भी टी.वी., सिनेमा में भरपूर देखते हैं। मैं जानता चाहता हूँ कि क्या सब लोग यहाँ बारात में सम्मिलित होने के लिए आये थे, नाच-गाने देखने-सुनने को आये थे ? वे तो यह सोचकर आये थे कि कुछ जिनवाणी का मर्म समझने को मिलेगा; पर यहाँ तो **सुनने को बोलियाँ मिल रही हैं और देखने-सुनने को नाच-गाने मिल रहे हैं। अरे भाई ! इनसे तो जैनधर्म की प्रभावना नहीं, अप्रभावना ही हो रही है।**

उक्त संदर्भ में पण्डितजी का निम्नांकित कथन दृष्टव्य है -

''तथा कोई भक्ति आदि कार्यों में हिंसादिक पाप बढाते हैं; गीत-नृत्यगानादिक व इष्ट भोजनादिक व अन्य सामग्रियों द्वारा विषयों का पोषण करते हैं; कुतूहल प्रमादादिरूप प्रवर्तते हैं - वहाँ पाप तो बहुत उत्पन्न करते हैं और धर्म का किंचित् साधन नहीं है। वहाँ धर्म मानते हैं सो सब कुधर्म है।[१]

देखो, काल का दोष, जैनधर्म में भी कुधर्म की प्रवृत्ति हो गयी है। **जैनमत में जो धर्मपर्व कहे हैं, वहाँ तो विषय-कषाय छोड़कर संयमरूप प्रवर्तना योग्य है। उसे तो ग्रहण नहीं करते और व्रतादिक का नाम धारण करके वहाँ नाना श्रृंगार बनाते हैं, इष्ट भोजनादि करते हैं, कुतूहलादि करते हैं व कषाय बढाने के कार्य करते हैं, जुआ इत्यादि महान पापरूप प्रवर्तते हैं।**[२]''

इस पर कुछ लोग कहते हैं कि यह सब तो ठीक; परन्तु इसमें मिथ्यात्व का पोषण कैसे हो गया ?

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए पण्डितजी कहते हैं कि -

''तत्त्वश्रद्धान करने में प्रयोजनभूत तो एक यह है कि - **रागादिक छोड़ना। इसी भाव का नाम धर्म है। यदि रागादिक भावों को बढाकर धर्म माने, वहाँ तत्त्वश्रद्धान कैसे रहा ? तथा जिन आज्ञा से प्रतिकूल हुआ। रागादिभाव तो पाप हैं, उन्हें धर्म मानना सो यह झूठा श्रद्धान हुआ; इसलिए कुधर्म के सेवन में मिथ्यात्वभाव है।**[३]''

इसप्रकार हम देखते हैं कि पण्डितजी साहब का अत्यन्त स्पष्टरूप से यह कहना है कि किसी भी प्रकार के रागात्मक भावों और तदनुरूप होनेवाली क्रियाओं, बाह्य प्रवृत्तियों को धर्म मानना या धर्म मानकर करना मिथ्यात्व है। जब शुभरागात्मक भाव और तदनुरूप शुभ क्रियाओं को धर्म मानना मिथ्यात्व है; तो फिर विषय-कषायपोषक रागादिभाव

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ १८९ २. वही, पृष्ठ १९० ३. वही, पृष्ठ १९१

और नृत्यगानादिरूप असत् प्रवृत्तियों को धर्म मानकर करना सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप धर्म कैसे हो सकता है ?

इसलिए यह अत्यन्त स्पष्ट है कि **नृत्य-गान-कुतूहलादि क्रियायें और तदनुरूप भावों को धर्म मानना और धर्म मानकर करना धर्म तो है ही नहीं, अपितु धर्म के नाम पर होनेवाली कुधर्म की प्रवृत्तियाँ हैं।**

अत: इनसे बचकर रहना प्रत्येक आत्मार्थी का परम कर्तव्य है। ●

बारहवाँ प्रवचन

मोक्षमार्गप्रकाशक का **छठवाँ अधिकार** चल रहा है। इस अधिकार में कुदेव, कुगुरु और कुधर्म की चर्चा की गई है। अबतक कुदेव और कुगुरु की चर्चा हो चुकी है और कुधर्म की चर्चा चल रही है।

कुधर्म की प्रवृत्तियों की चर्चा करते हुए पण्डितजी कहते हैं कि **यज्ञादिक क्रियाओं में महाहिंसादिक उत्पन्न करे और इन्द्रियों के विषय-पोषण करे तथा उसमें धर्म माने, सो यह सब कुधर्म है।**

यद्यपि जैनदर्शन में यज्ञादि करने का कोई विधान नहीं है; तथापि आज जैनियों में भी यज्ञ होने लगे हैं। हम पर यह आरोप लगाया जाता है कि हम, एक तो यज्ञादि करते नहीं हैं और करते भी हैं तो उसमें अग्नि में किसी वस्तु को नहीं होमते।

अहिंसा परमो धर्म: का नारा देने वाले जैनधर्म में भी अब जिसमें हजारों जीवों की हिंसा होती है - ऐसे यज्ञ को नहीं करना अपराध हो गया है और यज्ञ करना धर्म हो गया है। यह भी जैनधर्म पर वैदिक धर्म का प्रभाव है। आज हमें सफाई देना पड़ रही है कि हम यज्ञ क्यों नहीं करते ?

आज समाज को हो क्या गया है ! यज्ञ करने को धर्म माननेवाले, कहनेवाले न्यायाधीश बन गये हैं, धर्माधिकारी बन गये हैं और वे हमसे जवाब मांगते हैं कि हम अग्नि में धूप क्यों नहीं खेते ?

अरे भाई ! यदि हमने अग्नि में धूप नहीं खेई तो इसमें कौन सा पाप हो गया। इसमें न तो किसी जीव की हिंसा हुई है, न झूठ बोला गया है, न चोरी हुई, न कुशील सेवन हुआ और परिग्रह का जोड़ना भी तो नहीं हुआ। हमने अग्नि में धूप नहीं खेई - यह तो नहीं करना हुआ, इसमें कोई पाप कैसे हो सकता है, इसमें कोई अपराध कैसे हो सकता है, आखिर हम किस बात का जवाब दें ?

क्या कभी कोई किसी से ऐसा प्रश्न भी करता है कि आपने हिंसा क्यों नहीं की, झूठ क्यों नहीं बोला, चोरी क्यों नहीं की, किसी की माँ-बहिन को क्यों नहीं छेड़ा और अधिक परिग्रह क्यों नहीं जोड़ा ?

जब इसप्रकार के प्रश्न किसी से नहीं किये जाते, तो फिर हमसे यह क्यों पूछा जाता है कि हम अग्नि में धूप क्यों नहीं खेते?

आज जो पूर्णत: शुद्ध सात्त्विक प्रवृत्ति है, उस पर सवाल-जवाब चलते हैं। हम करें भी क्या ? हम अध्यात्मप्रेमी लोग इतने अल्प मात्रा में हैं कि हमें जवाब देने की स्थिति में खड़ा होना पड़ता है।

इसके आगे पण्डितजी लिखते हैं कि तीर्थों में या अन्यत्र स्नानादि कार्य करें तो वहाँ छोटे-बड़े जीवों की हिंसा होती है, शरीर को आराम मिलता है; इसलिए विषय-पोषण होता है, कामादिक बढते हैं; फिर भी वहाँ धर्म मानता है; यह सब कुधर्म है।

हम जैनियों में भी जब राजगृही जाते हैं तो यात्रा के बाद लगभग सभी जैनी वहाँ स्थित कुण्डों में डुबकी लगाते हैं। कहते हैं कि जिन्हें दाद हो, खाज हो, एग्जिमा हो - इन कुण्डों में डुबकी लगाने से ये सब ठीक हो जाते हैं।

हो जाते होंगे, कोई आश्चर्य नहीं; क्योंकि वह पानी एकदम गर्म होता है। वह पानी जहाँ से आता है, वहाँ कहीं ऊपर जमीन में गंधक होगा, वह पानी उस गंधक में से पार होकर आता है; अत: शोधक होता है।

वे कुण्ड बहुत छोटे-छोटे हैं। इनमें ही अनेक लोग एकसाथ नहाते हैं। जो लोग उसमें नहाते हैं, उनमें दाद-खाजवाले ही अधिक होते हैं; अत: उनकी गंदगी भी उसी पानी में रह जाती है। इसकारण कभी ऐसा भी हो सकता है कि जिन्हें दाद-खाज न हो, उस पानी में नहाने से, उन्हें दाद-खाज हो जाये।

जो भी हो; पर वह पानी अनछना तो होता ही है, जब हम जैनी अनछने पानी का उपयोग ही नहीं करते; तब किसी भी नदी, तालाब, कुएं, बावड़ी में डुबकी कैसे लगा सकते हैं ?

उसमें डुबकी लगाने से धर्म भी कैसे हो सकता है ?

जो कुछ भी हो; पर लोग वहाँ बड़ी श्रद्धा से डुबकी लगाते हैं और ऐसा अनुभव करते हैं कि हम धर्म कर रहे हैं।

जब लोग राजगिरि यात्रा करके लौटकर अपने घर पहुँचते हैं, तब लोग उनसे पूछते हैं कि कुण्ड में डुबकी लगाई थी या नहीं ?

यदि वह न कर दे तो फिर देखो कितना दुख प्रगट किया जाता है; कहा जाता है कि तुम्हारा जाना व्यर्थ ही गया है।

कोई इस बात को याद नहीं करता कि राजगिरि के इस विपुलाचल पर्वत पर अनेकों बार भगवान महावीर की दिव्यध्वनि खिरी थी; उसमें क्या आया था ? इस बात का किसी को भी विकल्प नहीं आता।

पण्डितजी तो कहते हैं कि ये स्नानादि तो विषय-कषाय के पोषक कार्य हैं; इनमें धर्म कैसे हो सकता है ?

इसके बाद दान की चर्चा करते हुए पण्डितजी रयणसार की गाथा-२६ प्रस्तुत करते हैं; जो इसप्रकार है -

सप्पुरिसाणं दाणं कप्पतरूणं फलाणं सोहं वा।
लोहीणं दाणं दइ विमाणसोहा सवस्स जाणेह ।।

सत्पुरुषों को दान देना कल्पवृक्षों के फलों की शोभा के समान है; क्योंकि कल्पवृक्ष सुख और शोभा - दोनों देते हैं तथा लोभी पुरुषों को दान देना मुर्दे की ठठरी की शोभा के समान है। तात्पर्य यह है कि जब मुर्दे की ठठरी सजाई जाती है तो शोभा तो होती है, पर परिवारवालों को अत्यन्त दु:खदायी होती है।

अन्त में निष्कर्ष के रूप में पण्डितजी लिखते हैं कि दयादान और पात्रदान के सिवा अन्य दान देकर धर्म मानना कुधर्म है।

जब हम किसी को कुछ दान में देते हैं तो हमें उसकी पात्रता भी तो देखना चाहिए, साथ में यह विचार भी करना चाहिए कि हम क्या दे रहे हैं, उसकी उपयोगिता क्या है, उससे प्राप्त करनेवाले को क्या लाभ होगा?

बिना विचार किये किसी को भी कुछ भी दे देना विवेक सम्मत कार्य नहीं है। **(क्रमश:)**

चन्देरी में डॉ. भारिल्ल का सम्मान

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 16 फरवरी को अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उद्योगपति श्री कृष्णजी सोमानी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय विधायक श्री राजकुमार सिंह महुअन एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर, एडवोकेट श्री मथुराप्रसादजी मड़वैया गुना, श्री गेंदालालजी पुजारी एवं श्री सुनीलजी सरल खनियांधाना तथा श्री अशोकजी जैन (ट्रस्टी एवं मंत्री - जैन पंचायत) उज्जैन उपस्थित थे।

इस अवसर पर सर्वप्रथम श्री अमोलकचंदजी कठरया ने डॉ. भारिल्ल का परिचय दिया तथा श्री गेंदालालजी सर्राफ द्वारा अभिनंदन-पत्र का वाचन कर उन्हें भेंट किया गया। चन्देरी जैन समाज की ओर से अध्यक्ष श्री आनंदकुमारजी रोकड़िया, चौबीसी जैन मंदिर ट्रस्ट की ओर से महामंत्री श्री निर्मलकुमारजी कठरया तथा श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर की ओर से अध्यक्ष श्री चौधरी विनयकुमारजी बजाज ने माल्यार्पण, तिलक, श्रीफल एवं शॉल भेंट कर डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनंदन किया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने तथा मंगलाचरण कुमारी परिणति पाटील ने किया।

सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 11 से 17 फरवरी तक सकल दि. जैन समाज कोहेफिजा भोपाल द्वारा श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के प्रात: **सिद्धचक्र महामंडल विधान की जयमाला** एवं सायं **समयसार का सार** पर प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. अभिनंदनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर, पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के व्याख्यानों का लाभ मिला। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग सम्मिलित हुये।

प्रथम दिन नवनिर्मित महावीर स्वाध्याय भवन का उद्घाटन माननीय श्री उमाशंकरजी गुप्ता (गृहमंत्री म.प्र. शासन), श्री कैलाशचंदजी मिश्र (अध्यक्ष-नगर निगम भोपाल), तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों, गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में श्रीमती बदामीबाई महेन्द्र सुनील जैन 501 परिवार द्वारा किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनंदनकुमारजी खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुनीलजी धवल, पण्डित अनिलजी धवल एवं पण्डित दीपकजी धवल ने संपन्न कराये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

9 से 11 मार्च	निसई (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयंती
12 मार्च (प्रात:)	मकरौनिया-सागर	प्रवचन
12 मार्च (सायं)	सिलवानी	प्रवचन एवं हीरक जयंती
13 मार्च (सायं)	महावीर जिनालय, सागर	प्रवचन
14 मार्च (प्रात:)	तारण तरण चैत्यालय	प्रवचन
14 मार्च (सायं)	मधुबन पैलेस, सागर (विजय टॉकीज परिसर)	हीरक जयन्ती
15 व 16 मार्च	खड़ैरी (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
17 व 18 मार्च	दमोह	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
24 व 25 मार्च	उदयपुर	महावीर जयन्ती/हीरक जयन्ती
26 मार्च	भिण्डर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
31 मार्च से 4 अप्रैल	मुक्तागिरि	विद्वत् ज्ञान गोष्ठी (सेमिनार)
5 व 6 अप्रैल	छिन्दवाड़ा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
7 व 8 अप्रैल	नागपुर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
11 मई से 3 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर व हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 25 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
1 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर

!! आराधना !! !! प्रभावना !!

श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर द्वारा संचालित

आचार्य कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन

तीर्थधाम पंचतीर्थ, कुन्दकुन्द नगर, सोनागिर

सत्र 2010-2011 में हिन्दी माध्यम से कक्षा-7वीं, 8वीं, 9वीं में प्रवेश हेतु शीघ्र संपर्क करें।

शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री (प्राचार्य), मो.- 09893224022

प्रवेश हेतु साक्षात्कार शिविर

दिनाँक 27 मार्च से 31मार्च 2010 तक

प्रकाशन तिथि : 26 फरवरी 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए. (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127